PROF. NAVJIVAN RASTOGI

Prof. Navjivan Rastogi, hails in the illustrious lineage of Prof. K C Pandey and represents the contemporary ingenious Indian scholarship dedicated to unraveling the profound Abhinavan thought.

2. Born on 21st February, 1939, Prof. Rastogi received degrees of Bachelor of Arts in 1957, Master of Arts in 1959 and Doctorate in 1967 from the Lucknow University. His tryst with Abhinavagupta began at the Master's level itself with his dissertation on the *Sotras of Abhinavagupta*. His PhD. thesis was the first ever work on the Krama system, the core subsystem of Trika Saivism of Kashmir. He joined faculty in 1968 as a Lecturer in the Abhinavagupta Institute of Aesthetics and Isatva Philosophy, founded by Prof. K.C Pandey as 'Centre for Advanced Study". Prof. Pandey is known over the world for 'discovering' Abhinavagupta, the 10th century doyen of Kashmir Saivism. Prof. Rastogi became Honorary Director of this institute.

3. Prof. Rastogi's potential was internationally recognized with the publication of his pioneering work The Krama Tantricism *(1979)* followed by Introduction to the Tantraloka: A Study in Structure (1986). His other major publications are : Kasmira Sivadvayavada ki Mula Avadharanayen *(2002):* Abhinavagupta ka Tantragamiya Darsanika Cintana *(2012)* and Kasmira Sivadvayavada mem pramana-cintana *(2013).* The last one may be reckoned as the first systematic attempt towards unraveling the Pratyabhijna epistemology. His latest publication Kalikrama and Abhinavagupta (2022) is an attempt to explore the epistemological ethos of an esoteric tantric system. Currently he is working on Pratyabhijna Prarrana-darsana (metaepistemology of the Pratyabhijna School). Besides, he is critically editing an unpublished commentary called *Vyakhya* on Abhinavagupta's Isvara; pratyabhijnasutra-Vimarsini and a recently discovered rare large portion of Isvara- Pratyabluijna-Vivrti by Utpaladeva. Abhinavagupta's grand teacher and founder of the Pratyabhijna School.

4. Prof. Rastogi has published a large number of research papers, has extensively lectured, conducted and participated in several national and international workshops/seminars on Abhinavan aesthetics and Trika Saivism of Kashmir. He has served on several academic committees, expert bodies, advisory and editorial boards and has been acting as an ongoing source of guiding research across India and abroad.

5. Prof. Rastogi is the recipient of several awards and honours. He was felicitated by Lucknow University for his contribution to knowledge and development in 2006. He was bestowed with the Honour of Distinguished Faculty by the Lucknow University in its Centenary Year 2020, He was nominated National Fellow for 2020-21 by the Indian Council of Philosophical Research, Ministry of Education, Delhi. He was conferred First Shaivacharya Swami Lakshmanjoo Sammaan by Ishwar Ashram Trust, New Delhi (2015) and Sharada Samman by Panun Kashmir, Jammu (2017). He was nominated as Vice-President of Acharya Abhinavagupta Sahasrabdi Samaroh Samiti, New Delhi (2016) he delivered Keynote address in Vigyan Bhavan on March 13, 2016.

प्रो. नवजीवन रस्तोगी

प्रो. नवजीवन रस्तोगी, लब्ध प्रतिष्ठ प्रो. के. सी. पांडे के योग्य शिष्य हैं और गहन अभिनव विचारधारा को आलोकित करने के लिए समर्पित समकालीन भारतीय विद्वत–परंपरा के वाहक हैं।

2. 21 फरवरी, 1939 को जन्मे, प्रो. रस्तोगी ने लखनऊ विश्वविद्यालय से 1957 में बैचलर ऑफ आर्ट्स, 1959 में मास्टर ऑफ आर्ट्स और 1967 में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की। स्नातकोत्तर कक्षा में ही उन्होंने अभिनवगुप्त के सूत्र पर शोध निबंध लिखा। कर्म प्रणाली पर उनका पीएचडी शोध प्रबंध कश्मीर के त्रिक शैववाद की इस मुख्य उपप्रणाली पर पहला शोध था। वह 1968 में अभिनवगुप्त इंस्टीट्यूट ऑफ एस्थेटिक्स एंड इसत्व फिलॉसफी में व्याख्याता बने, जिसकी स्थापना प्रो.के. सी. पांडे ने 'सेंटर फॉर एडवांस्ड स्टडी' में की थी। प्रो. पांडे को दुनिया भर में 10वीं सदी के कश्मीर शैव धर्म के प्रणेता अभिनवगुप्त की 'पुनर्प्रतिष्ठा' के लिए जाना जाता है। प्रो. रस्तोगी इस संस्था के मानद निदेशक बने।

3. प्रो. रस्तोगी के अग्रणी कार्य "द कर्मा तांत्रिसिज्म" (1979) उसके बाद "इंट्रोडक्शन टू द तंत्रलोकः ए स्टडी इन स्ट्रक्चर" (1986) के प्रकाशन के साथ उनकी विद्वता अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हो गई। उनकी अन्य प्रमुख रचनाएं हैं: कश्मीर शिवद्वयवाद की मूल अवधारणाएं (2002); अभिनवगुप्त का तंत्रगामीय दार्शनिक चिंतन (2012) और कश्मीर शिवद्वयवाद में प्रमाण–चिंतन (2013)। इस अंतिम पुस्तक को हम प्रत्यभिज्ञा ज्ञानमीमांसा को आलोकित करने की दिशा में पहला व्यवस्थित प्रयास मान सकते हैं। उनकी नवीनतम पुस्तक कलिकर्म और अभिनवगुप्त (2022) एक गूढ़ तांत्रिक प्रणाली के ज्ञानमीमांसीय लोकाचार के विश्लेषण का एक प्रयास है। वर्तमान में, वह प्रत्यभिज्ञा प्रारना–दर्शन (प्रत्यभिज्ञा विचारधारा की मेटाएपिस्टेमोलॉजी) पर काम कर रहे हैं। इसके अलावा, वह अभिनवगुप्त के ईश्वर पर "व्याख्या" नामक एक अप्रकाशित भाष्य; प्रत्यभिज्ञासूत्र–विमर्शिनी और अभिनवगुप्त के महान शिक्षक और प्रत्यभिज्ञा स्कूल के संस्थापक उत्पलदेव द्वारा लिखित "ईश्वर – प्रत्यभिज्ञा–विवृत्ति" के हाल ही में खोजे गए एक दुर्लभ और बड़े हिस्से का समालोचनात्मक संपादन कर रहे हैं।

4. प्रो. रस्तोगी के बड़ी संख्या में शोध–पत्र प्रकाशित हैं, उन्होंने बड़े पैमाने पर व्याख्यान दिए हैं, अभिनव सौंदर्यशास्त्र और कश्मीर के त्रिक शैववाद पर कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कार्यशालाओं/सेमिनारों का संचालन किया है और उनमें भाग लिया है। उन्होंने कई शैक्षणिक समितियों, विशेषज्ञ निकायों, परामर्शदात्री और संपादकीय बोर्डों में योगदान दिया है और भारत एवं विदेशों में शोध मार्गदर्शन के एक सतत स्रोत रहे हैं।

5. प्रो. रस्तोगी को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा ज्ञान और विकास में उनके योगदान के लिए उन्हें 2006 में सम्मानित किया गया था। लखनऊ विश्वविद्यालय द्वारा अपने शताब्दी वर्ष 2020 में उन्हें विशिष्ट संकाय सदस्य का सम्मान दिया गया था। भारतीय दर्शन अनुसंधान परिषद, शिक्षा मंत्रालय, दिल्ली द्वारा उन्हें 2020–21 के लिए राष्ट्रीय फेलो नामित किया गया था। उन्हें ईश्वर आश्रम ट्रस्ट, नई दिल्ली द्वारा प्रथम शैवाचार्य स्वामी लक्ष्मणजू सम्मान (2015) और पनुन कश्मीर, जम्मू द्वारा शारदा सम्मान (2017) प्रदान किया गया था। उन्हें आचार्य अभिनवगुप्त सहस्राब्दी समारोह समिति, नई दिल्ली (2016) का उपाध्यक्ष मनोनीत किया गया।